कृषि विकास की अवधारणा

डॉ ब्रजेश कुमार सिंह
सहायक प्रोफेसर भूगोल विभाग

भारत में कृषि न केवल एक आर्थिक क्रिया है बल्कि यहाँ के निवासियों की जीवन शैली भी है। कृषि विकास से तात्पर्य केवल उत्पादकता में वृद्धि से नहीं है, बल्कि निम्न उत्पादकता वाली परम्परागत पद्धति में परिष्कार करके उसे उच्च उत्पादकता से युक्त एक वैज्ञानिक एवं आधुनिक स्वरूप प्रदान करना है। कृषि के आर्थिक क्रिया होने के कारण इसे विकसित करने हेतु भूमि, श्रम, पूँजी निवेश और संगठन की कुशल व्यवस्था होना आवश्यक है। इनके अतिरिक्त कृषि के क्षेत्र में नये तकनीकी ज्ञान का विस्तार सेवाओं के माध्यम से कृषकों के बीच प्रचार-प्रसार तथा उनको अपनाया जाना है। श्रम पूँजी एवं अन्य संसाधनों का संयुक्त रूप से विकास करने का प्रयास किया जाना है जिसके फलस्वरूप कृषि विकास में पारिस्थितिक परिवर्तन होता है, जो नये विचारों एवं आविष्कारों के प्रयास से निकटतापूर्वक जुडा हुआ है। कृषि विकास का तात्पर्य कृषि हेतु नयी दशाओं का परिवर्धित अनुकूलन एव उसके अन्तर्निहित सम्भावनाओं का पूर्ण विकास है। कृषि विकास की समस्यायें वर्तमान उत्पादन हेतु नई तकनीकी लाने की ही नहीं बल्कि इसके सरचनात्मक आधार में परिवर्तन की भी है। कृषि के विकास के अन्तर्गत मात्रात्मक वृद्धि एवं गुणात्मक परिष्कार दोनों तथ्य अन्तर्निहित होते हैं। कृषि विकास से तात्पर्य किसी क्षेत्र में निवेशों के उच्च मात्रा में अनुप्रयोग के द्वारा भूमि उत्पादकता के परिष्कार से है।

कृषि के अन्तर्गत क्षैतिज एवं उर्ध्वाधर दोनों ही प्रकार का विकास होता है। कृषि में क्षैतिज विकास से तात्पर्य कृषिगत भूमि विस्तार से है. जबकि उर्ध्वाधर विकास से

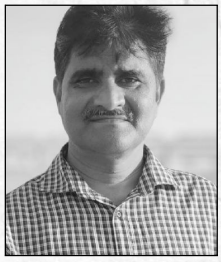

तात्पर्य प्रति एकड़ उत्पादन में वृद्धि से है। क्षैतिज विकास कृषि विकास का प्रथम चरण होता है और उर्ध्वाधर विकास अंतिम एवं अनुकूलतम दशा है। कृषि विकास से सम्बन्धित इन्हीं तथ्यों को दृ ष्टिगत रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन में कृषि विकास के विविध पक्षों से सम्बन्धित सूचकों का चयन करके उनके आधार पर अध्ययन क्षेत्र में कृषि विकास के स्तर का मापन एवं समान कृ षि विकास वाले क्षेत्रों के निर्धारण का प्रयास किया गया है, जिससे पिछडे एवं अति पिछडे क्षेत्रों की पहचान की जा सके तथा क्षेत्र के सर्वांगीण विकास हेतु एक नियोजित कृषि विकास प्रारूप प्रस्तुत किया जा सके।

कृषि विकास का मुख्य अभिप्रेरक तत्त्व कृषि उत्पादकता में वृद्धि है, जो मुख्य तथा सिंचित क्षेत्रफल में वृद्धि द्वारा ही सम्भव है। इसी कारण भारतीय कृषि को आधुनिक करने के लिए सिचाई की प्रमुख योजनाओं को स्वीकारा गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद आर्थिक विकास हेतु कृषि ऊर्जा एवं आधारभूत उद्योगों के विकास श्रृंखला में अपनायी गई हरित क्राति द्वारा कृ षि क्षेत्र में उसकी उत्पादकता तथा सम्पूर्ण उत्पादन में कई गुना वृद्धि हुई, जिससे खाद्यान्त्र की पूर्ववर्ती समस्या का समाधान बहुत हद तक हो गया, गेहूँ तथा धान के उत्पादन में अप्रत्याशित वृद्धि दर्ज की गई। इस नई नीति ने उन्नतशील बीजों के प्रयोग के कार्यक्रम (ए.भ.इ.इ.) पर अधिक जोर दिया जा रहा है। उन्नतशील बीज कार्यक्रम का सीधा सम्बन्ध उर्वरक, सिंचाई, फसल सुरक्षा आदि से है अत नई कृषि नीति

में उन्नतशील बीजों के साथ-साथ नये कृषि यंत्रों, मशीनों, सस्ते कृषि ऋण, विपणन एव भण्डारण बीजों के साथ-साथ नये कृषि यत्रों, मशीनों, ससते कृषि ऋण, विपणन एव भण्डारण सुविधाओं में सुधार, कृषि उपजों के लाभकारी मूल्य, कृषि शोधों को प्रोत्साहन, कृषि प्रशिक्षण एवं शस्य प्रबन्धन आदि को महत्त्व देकर कृषि विकास के स्तर को बढ़ाने का प्रयास किया गया है परन्तु कृषि का लाभकारी स्वरूप एवं व्यापकता में बहुत परिवर्तन नहीं हुआ।

बड़े पैमाने पर कृषि विकास हेतु कृषकों को संगठनात्मक सहयोग की आवश्यकता होती है। ग्रामीण कृषक समाज के अतिरिक्त सहकारी संस्थाओं तथा बैंक, कृषि, भारतीय खाद्य निगम, कृषि यंत्रों और उर्वरकों के कारखाने आदि अनेक संगठन कृषकों की आवश्यकताओं की पूर्ति में सलग्न रहते हैं।

कृषि विकास का मुख्य उद्देश्य कृषि उत्पादन में वृद्धि एवं लोगों के जीवन स्तर में सुधार लाने के लिए आर्थिक वृद्धि की उच्च दर को प्राप्त करना है। अर्थतत्र के इस प्रखण्ड का विकास इस कारण नियोजकों, अर्थशास्त्रियों एवं भूगोलवेत्ताओं के लिए प्राथमिक महत्त्व का विकास है, एवं इनके समग्र सुधार हेतु साधनों की प्राप्ति करना है। कृषि विआकस की समस्यायें मात्र वर्तमान उत्पादन हेतु नई तकनीकि लाने की नहीं है, बल्कि संरचनात्मक आधार में परिवर्तन का भी है। भारतीय कृषि अर्थ तंत्र का मुख्य आधार है इस तथ्य को केवल कृषि प्रखण्ड द्वारा कुल घरेलू उत्पादन में योगदान के रूप में नहीं देखा जाता है, बल्कि कृषि पर निर्भर रहने वाले लोगों की संख्या औद्योगीकरण के कारणों के रूप में भी कृषि प्रखण्ड की भूमिका के रूप में देखा जाता है। अपने देश के उद्योगों में महत्त्वपूर्ण प्रखण्ड जैसे वस्त्र उद्योग, चीनी या लघु ग्रामीण उद्योग, तेल, दाल, ऑटा आदि पर आधारित है।

***

हम हैं किससे कम

- रंजू प्रजापति
बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

हम हैं किससे कम
नयी राह पर चलने वाले
खुली हवा में पलने वाले
अच्छे बच्चे हम, हम हैं किससे कम।

पाँव नहीं लेकिन
अपने पैरों पर खड़े हुए
हर मुश्किल आसान बनाकर
इतने बढ़े हुए
आगे बढ़े कदम, हम हैं किससे कम
बोलो हम हैं किससे कम।।

हाथ नहीं पर हम लिख सकते
एक नई गाथा
जिसके आगे बड़े-बड़ों का
झुक जाए माथा
बाहों में वह दम। हम हैं किससे
कम बोलो, हम हैं किससे कम।।

हमें कुरूप समझने वालों
क्या यह नहीं पता
मन की सुन्दरता होती है।
सच्ची सुन्दरता
तोड़े सभी भरम। हम हैं किससे कम
बोलो हम हैं किससे कम।।

***